राजभाषा हिन्दी का महत्व एवं योगदान

रूप चन्द (प्राचार्य)
पौड़ी गढ़वाल

"जन–जन की भाषा है हिन्दी, भारत की आशा है हिन्दी।
जिसने पूरे देश को जोड़े रखा है, वो मजबूत धागा है हिन्दी।
हिन्दुस्तान की गौरव–गाथा है हिन्दी, एकता की अनुपम परम्परा है हिन्दी
जिसने काल को जीत लिया, ऐसी कालजयी भाषा है हिन्दी।
सरल शब्दों में कहा जाए तो, जीवन की परिभाषा है हिन्दी।

हिन्दी शब्द की उत्पति

'हिन्दी' वस्तुत, फारसी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है हिन्द का या हिन्द से संबंधित। हिन्दी शब्द की निष्पत्ति सिन्धु–सिन्ध से हुई है क्योंकि ईरानी भाषा में 'स' को 'ह' बोला जाता है। इस प्रकार हिन्दी शब्द सम्पूर्ण में सिन्धु शब्द का प्रतिरूप है। कालांतर में हिन्द शब्द सम्पूर्ण भारत का पर्याय बनकर उभरा। इसी 'हिन्द' से हिन्दी शब्द बना है। आज हम जिस भाषा को हिन्दी के रूप में जानते हैं वह आधुनिक आर्यभाषाओं में से एक है।

संविधान स्वीकृत स्थिति

स्वंत्रता मिलने पर संविधान सभा ने एकमत से यह निर्णय लिया कि, "हिन्दी भारत की राजभाषा होगी और लिपि देवनागरी होगी। साथ ही सोलह प्रादेशिक भाषाओं को भी मान्यता दी गई। संविधान के भाग 17 के अध्याय 1 की धारा 343 (i) के अनुसार, "संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी।"

हिन्दी दिवस

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा के अनुरोध पर सन् 1953 से 14 सितम्बर को प्रतिवर्ष राष्ट्रीय–स्तर पर 'हिन्दी–दिवस' के रूप में मनाया जाता है जो कि सभी हिन्दी प्रेमियों व हिन्दी भाषियों के लिए आत्मगौरव व हिन्दी के गौरव की पराकाष्ठा का विषय है।

हिन्दी के विभिन्न रूप

"हिन्दी मेरी भाषा है, हिन्दी मेरी आशा है,
हिन्दी का उत्थान करना, यही मेरी जिज्ञासा है,
हिन्दी की बोली अनमोल, एक शब्द के कई विलोम,
हिन्दी हिन्द हिमालय पर, ऊँचे आसन वाली है,
हिन्दी जयहिन्द और वन्देमातरम् के उच्चारण वाली है।"

बोली

एक छोटे से क्षेत्र में बोले जाने वाला भाषा रूप स्थानीय होता है, इसी को बोली कहते हैं। जैसेः–हरियाणा में हरियाणावी की, राजस्थान में राजस्थानी, गढवाल में गढ़वाली, मेवात में मेवाती।

उपभाषा

बोली के जिस रूप को पढ़े–लिखे लोग प्रयोग में लाते हैं, उसे उपभाषा कहते हैं।

मानक भाषा

व्याकरण के नियमों से अनुशासित भाषा मानक भाषा कहलाती है।

राष्ट्रभाषा

राष्ट्रभाषा किसी भी राष्ट्र की ऐसी उन्नत भाषा को कहा जाता है जो राष्ट्र के सभी भागों में बोली व समझी जाती है। किसी समय यह सम्मान संस्कृत को प्राप्त था और आज हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा है।

राजभाषा

देश के प्रशासनिक व राजकीय कार्य–व्यापार जिस भाषा में होते हैं, वह राजभाषा कहलाती है। भारत की राजभाषा हिन्दी है।

वर्तमान स्वरूप

भारत एक बहुभाषी देश है। भारत में अनेक धर्मों को मानने वाले, अनेक भाषाओं और बोलियों को बोलने वाले, अलग–अलग जातियों के लोग अपनी–अपनी स्वतंत्रता के साथ रहते हैं। भारत के सभी नागरिकों को चाहे वे किसी भी क्षेत्र के निवासी हों, किसी भी धर्म के उपासक हों, किसी भी भाषा में बोलने वाले हो, हमें एक बात खुले दिमाग से सोचनी होगी कि निज भाषा की स्वतंत्रता राष्ट्रीय स्वतंत्रता से भी अधिक महत्वपूर्ण है। राष्ट्र तो किसी भी क्रांति की लहर से स्वतंत्र हो सकते हैं किंतु भाषा के पराधीन होने पर उसकी मुक्ति कठिन हो सकती है। उदाहरण के लिए हम भारतीय आजादी के 71 वर्षों की स्वाधीनता के पश्चात् भी अपनी भाषा को अंग्रेजी दासता से मुक्त नहीं करवा पाये। अतः भाषा की स्वतंत्रता राष्ट्र की स्वतंत्रता से अधिक महत्वपूर्ण है। अतः

"देश वही होता है जिसकी कोई होती अपनी भाषा,
भाषा वह जिसमें सब व्यक्त करें अभिलाषा,
यह अमीर खुसरो की बोली, हे कबीर की वाणी,
मीरा की है पीर इसी में और नेह रसखानी।"

हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा, राजभाषा तथा सम्पर्क भाषा है। यह भारत में 28 करोड़ लोगों की मातृभाषा तथा 30 करोड़ लोगों की सम्पर्क भाषा है। हिन्दी पूर्णतया वैज्ञानिक भाषा है। इसके उच्चारण और लेखन में एकरूपता है। राजाभाषा हिन्दी को अपने वर्तमान स्वरूप तक आने के लिए निम्नलिखित कालखण्डों से होकर गुजरना पड़ा है।

हिन्दी कालखण्ड पर एक नजर

1. 769 ई. में पहले हिन्दी साहित्य (दोहा कोश) की रचना की गई।
2. 1100 ई. में आधुनिक देवनागरी लिपि का जन्म हुआ।
3. 1826 ई. में कलकत्ता से पहला हिन्दी समाचार पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' का जन्म हुआ
4. 1913 ई. में दादासाहेब फाल्के द्वारा पहली हिन्दी फिल्म 'राजा हरिश्चन्द्र' का निर्माण हुआ।
5. 1929 ई. में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने प्रथम वास्तविक 'हिन्दी–साहित्य का इतिहास लिखा।
6. 1930 में हिन्दी संगणक का जन्म हुआ।
7. 1931 में पहली बोलती फिल्म 'आलमआरा' का निर्माण हुआ।
8. 14 सितम्बर, 1949 को हिन्दी को भारत की राजभाषा घोषित किया गया।
9. राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा के अनुरोध पर सन् 1953 से 14 सितम्बर को प्रतिवर्ष 'हिन्दी–दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

महत्व

मनुष्य के मानसिक और बौद्धिक विकास के लिए भी राष्ट्रभाषा आवश्यक है। मनुष्य चाहे जितनी भी भाषाओं का ज्ञान प्राप्त कर ले परन्तु अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए उसे

अपनी भाषा की ही शरण लेनी पड़ती है। ऐसा करने से उसे मानसिक संतोष का अनुभव होता है। इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय एकता को बनाए रखने के लिए भी राष्ट्रभाषा की आवश्यकता होती है।

1. स्वतंत्रता संग्राम के दौरान इस भाषा ने राष्ट्र को संगठित कर एकता के सूत्र में बांधने का जो महान एतिहासिक कार्य किया है, वह स्वर्णाक्षरों में अंकित है।
2. राजभाषा हिन्दी एकता, भावना और प्रेम की भाषा है।
3. राजभाषा हिन्दी ने सभी जनआंदोलनों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।
4. भाषा किसी भी देश की धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा दार्शनिक परिस्थति को जानने का सशक्त माध्यम होती है।
5. भारत में हिन्दी समस्त जनमानस की संवदेनाओं को प्रकट करने का सरल माध्यम है।
6. राजभाषा हिन्दी के शब्दों में समरसता और आत्मीयता है।
7. राजभाषा हिन्दी अत्यंत व्यापक और समृद्व है।
8. राजभाषा हिन्दी जनता और सरकार के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी है।
9. राभाषा हिन्दी हिन्द की ऊर्जा और आत्मा है।
10. राजभाषा हिन्दी बाजार वाणिज्य और व्यवसाय की भाषा है।
11. आज राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय–स्तर पर हिन्दी का वटवृक्ष निरन्तर बढ़ रहा है।
12. कम्प्यूटर (संगणक) के लिए यह सर्वथा उपयुक्त भाषा है।
13. आज विश्व के 150 से भी अधिक शिक्षण–संस्थानों व संगठनों में हिन्दी के अध्ययन व अध्यापन का अभियान चलाया जा रहा है।
14. आज हिन्दी के कारण ही भारत के सिनेमा को वैश्विक पहचान मिली है।
15. संगणक के लिए हिन्दी के नये–नये सॉफ्टवेयर बनाए जा रहे हैं।
16. आज एक आधुनिक भाषा के रूप में हिन्दी में सभी विधाओं में लेखन कार्य हो रहा है।
17. हिन्दी भाषा विज्ञान, तकनीकी ज्ञान व कार्यालयी प्रयोग में पूर्णतः समर्थ है।
18. भारत व चीन के बढ़ते व्यापारिक संबंधों के चलते अब चीनी युवा रूचि के साथ हिन्दी को सीख रहे हैं।
19. आज हिन्दी भाषा का शब्दकोश निरन्तर विकसित हो रहा है।
20. हिन्दी भाषा की लिपि विश्व की सर्वाधिक लोकप्रिय और सर्वमान्य लिपि है।

राष्ट्र–निर्माण में हिन्दी का महत्व

राष्ट्र–निर्माण में हिन्दी का महत्वपूर्ण योगदान है। भाषा और राष्ट्र दोनों एक–दूसरे के पूरक हैं। भाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है।

क्या गीता, क्या वेद सभी इसको याद जुबानी,
भारत की भारती यही है, यही है दयानंद की वाणी,
इस धरती पर जहाँ कहीं भी, कोई हिंदुस्तानी,
वहाँ–वहाँ तक हिन्दी गंगा करती सफल रवानी।"

राष्ट्रीय एकता की प्रतीक

हिन्दी ही एकमात्र ऐसी भाषा है जो पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक राष्ट्र को एकता के सूत्र में बांधकर रख सकती है। कहा भी गया है।

"रंग अनेक, तिरंगा एक है,
प्रांत अनेक, भारत एक है,
समाज अनेक हैं, देश एक है,
उसी प्रकार भाषाएं अनेक हैं, राजभाषा हिन्दी एक है।"

अग्रणी भाषा

भारतीय भाषाओं के सर्वेक्षक डॉ. देवी सिंह का कहना है कि भाषाओं के क्षेत्र में हम यूरोप के देशों से 3 से 4 गुणा आगे हैं। यूरोप के देशों में 250 से अधिक भाषाएं नहीं बोली जाती हैं जबकि सम्पूर्ण भारत वर्ष में 850 से अधिक भाषाएं बोली जाती हैं। भारत का असम एक ऐसा राज्य है जो कि आकार में इंग्लैंड के बराबर ही है, वहाँ पर लगभग 52 भाषाऐं ही बोली जाती हैं।

हिन्दी सिर्फ एक भाषा नहीं, हमारे राष्ट्र की पहचान है।
हिन्दी हम हिन्दी हैं, हिन्दी का हम सबको अभिमान है,
हिंदुस्तानी हैं हम, गर्व करो हिन्दी भाषा पर,
उसे सम्मान देना और दिलाना है, कर्त्तव्य है हम पर।।"

हिन्दी अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर

पश्चिम के समृद्ध देशों में भारतीयों के द्वारा हिन्दी–भाषा के वटवृक्ष को सबल बनाया जा रहा है। आज हिन्दी–परिवार बहुत विराट एवं विशाल है। नेपाल, श्रीलंका, बर्मा तथा चीन के लिए हिन्दी सद्भाव की भाषा रही है। अफ्रीका, यूरोप देश आस्ट्रेलिया आदि के लिए हिन्दी प्रजातंत्र की भाषा है। वर्तमान समय में अमेरिका, जापान, जर्मनी, कनाडा आदि देशों में प्रवासी हिन्दी साहित्य का अपने नए स्वरूप में तेजी से सृजन हो रहा है।

प्रमुख शिक्षाविद भारत के पूर्व राष्ट्रपति भारतरत्न डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने कहा था–

"जो लोग अपनी भाषा, संस्कृति और गौरव को नहीं जानते तथा जिन पर पश्चिमी सभ्यता का रंग चढ़ा है, वे भारतीय नहीं, भटके हुए मुसाफिर हैं।"

राजभाषा हिन्दी पर विद्वानों के विचार

1. भारत की भाषाएं नदियां हैं और हिन्दी महानदी – गुरू रविन्द्रनाथ टैगोर,
2. राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है। हिन्दी भाषा समाज का दर्पण है–महात्मा गाँधी
3. बंगला में लिखकर मैं बंगबंधु तो हो गया लेकिन भारतबंधु तभी कहलाऊंगा, जब हिन्दी में लिखा पाऊंगा–गुरू रविन्द्र नाथ टैगोर
4. इस समग्र देश की एकता के लिए हिन्दी अनिवार्य है–राजाराम मोहनराय
5. हिन्दी के द्वारा सारे भारत को एकता के सूत्र में पिरोया जा सकता है–दयानंद सरस्वती
6. हिन्दी ही भारत की राष्ट्रभाषा हो सकती है–लोकमान्य बालगंगाधर तिलक
7. मेरी मातृभाषा में कितनी ही खामियाँ क्यों न हों, मैं इससे इसी तरह चिपका रहूंगा जिस तरह बच्चा अपनी माँ की छाती से–महात्मा गाँधी
8. हिन्दी–अहिन्दी लोगों के लिए ठीक उतनी ही विदेशी है जितनी कि हिन्दी समर्थकों के लिए अंग्रेजी–सी.राजगोपालाचारी
9. भारत के सभी स्कूलों में हिन्दी की शिक्षा अनिवार्य होनी चाहिए–एनी बेसेन्ट
10. चीनी और अंग्रेजी के बाद हिन्दी विश्व की सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा बनेगी।
11. निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल। बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटे न हियो को सूल।।–भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
12. जब भाषा लुप्त होती है तो ज्ञान का एक संग्रहालय ही लुप्त हो जाता है–मदनमोहन मालवीय
13. लोकतंत्र और मीडिया की भाषा के रूप में हिन्दी भाषा सर्वोपरि है–डॉ. राजेन्द्र प्रसाद (पूर्व राष्ट्रपति)
14. प्रान्तीय ईर्ष्या–द्वेष को दूर करने के लिए हिन्दी का प्रचार आवश्यक है–नेताजी सुभाष चन्द्र 'बोस'
15. हिन्दी, हिन्दू, हिंदुस्तान ही हमारी पहचान है–भातेन्दु हरिश्चन्द्र

16. हिन्दी विश्व में भाषा भाषियों की दृष्टि से प्रथम एवं सबसे लोकप्रिय भाषा है–शोध–रिपोर्ट 2015, डॉ. जयन्ती नौटियाल
17. हिन्दी एक मत से नहीं, एकमत से बनी थी राजभाषा–श्रीलाल प्रसाद

उपसंहार

हिन्दी भाषा हमें विविधता में एकता का संदेश देती है। हिन्दी भाषा राष्ट्र की सामाजिक एवं सांस्कृतिक एकता की पक्षधर है। हिन्दी भाषा हमारे सामाजिक संस्कारों, मूल्यों एवं जीवन के आदर्शों को उजागर करती है। विश्वशांति, अहिंसा, समानता, उदारता, सहिष्णुता, नैतिक मूल्यों तथा सम्पूर्ण मानव जाति के न्याय के लिए लम्बे समय से हिन्दी–भाषा ने अन्तर्राष्ट्रीय–स्तर पर जो पहचान बनाई है उसे देखकर निर्भीक रूप से यह कहा जा सकता है कि हिन्दी अपने विस्तृत रूप में साकार होकर अंग्रेजी भाषा के स्थान पर द्वितीय भाषा के रूप में अवश्य स्थापित होगी।

"भाषा–संस्कृति प्राण देश के,
इनके रहते राष्ट्र रहेगा,
हिन्दी का जयघोष गुंजाकर,
भारत माँ का मान बढ़ेगा,
हिन्दी का अमृत होठों पर,
वाणी में उसका मंगल,
मन में, लेखन में हिन्दी हो,
प्रेम–भाव और समर्पण,
सब चिंतन–मन्थन तेरे हित अर्पण।
सब चिंतन–मन्यन तेरे हित अर्पण।।"

उस भाषा को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकारा जाना चाहिए जो देश के सबसे बड़े हिस्से में बोली जाती हो, अर्थात् हिन्दी।

–रवीन्द्रनाथ ठाकुर